वर्तमान भौतिकवादी तथा वैज्ञानिक परिवेश में मोक्ष–अवधारणा की जीवन में उपयोगिता : एक दार्शनिक विश्लेषण

निशी कुमारी

वर्तमान वैज्ञानिक तथा आधुनिक परिवेश में मोक्ष की क्या उपयोगिता है और कैसे यह जीवन के चरम पुरुषार्थ के रुप में प्राचीन काल से ही स्वीकारा जाता रहा है यह बड़ा ही प्रासंगिक प्रश्न है। मोक्ष की अवधारणा सभी भारतीय धर्मों में पायी जाती है चाहे वह वैदिक हो या अवैदिक। करीब–करीब सभी भारतीय दाशनिकों का यह मत है कि मोक्ष का अर्थ है परम आनन्द की अवस्था और प्रत्येक प्रकार के द्वैत जैसे सुख–दुःख हानि–लाभ, मान–अपमान, जीवन–मृत्यु आदि में सम–भाव में अवस्थित रहना। इस अवस्था की प्राप्ति के पश्चात् एक व्यक्ति सभी प्रकार के मानसिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। उपनिषद् में मोक्ष की इस अवस्था को 'सत्यम्, ज्ञानम्, आनन्दम्' कह कर परिभाषित किया गया है। पुनः गीता में भी कर्म–मार्ग, ज्ञान–मार्ग तथा भक्ति–मार्ग के आधार पर मोक्ष–प्राप्ति की चर्चा की गयी है। कैसे हम पुनः आज के आधुनिक परिवेश में मोक्ष की प्राप्ति तथा इसकी उपयोगिता का वर्णन संक्षिप्त रुप में प्रस्तुत कर लोगों के समक्ष रख सकें जिससे इसकी सामाजिक उपादेयता और उपयोगिता पुनः प्रमाणित हो सके, हमारे इस लेख का यही मुख्य उद्देश्य है।